केरल ज्योति

फरवरी 2024

ISSN 2320-9976
UGC Care - List

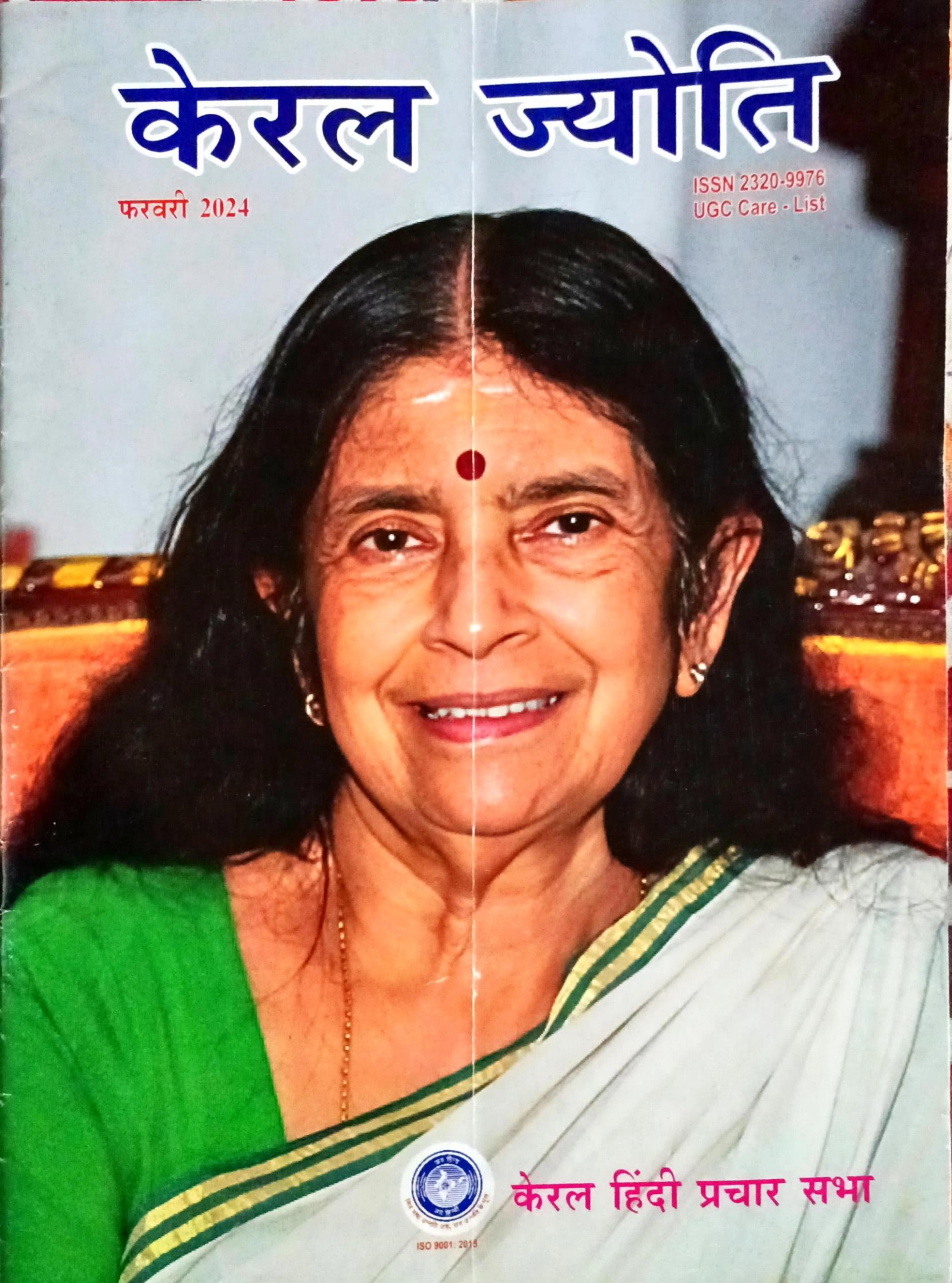

केरल हिंदी प्रचार सभा

ISO 9001: 2015

पुष्प : 60 दल : 11 अंक: फरवरी 2024

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना : मलयालम कविता में-**डॉ. जयकृष्णन. जे** 6

अमीर खुसरो के पुनर्पाठ का समसामयिक संदर्भ - **मधु वासुदेवन** 10

माखन लाल चतुर्वेदी की कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन-
डॉ.चंद्रकांत सिंह 14

स्त्री मुक्ति संघर्ष की दस्तावेज: 'शेष कादंबरी' उपन्यास - **मिनी.एन** 18

मोहन राकेश की नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - **शांती सी लोपस** 20

नयी कहानी आंदोलन की पृष्ठभूमि : एक अवलोकन - **डॉ. उपेन्द्र कुमार** 24

सांस्कृतिक विस्थापन की त्रासदी : पाकिस्तान मेल उपन्यास के संदर्भ में
लक्ष्मिप्रिया बालकृष्णन 29

मेरे पूजनीय गुरुवर श्री के.एस.राघवन पिल्लै (संस्मरण) -
के.राघवन नायर 34

समकालीन सांस्कृतिक परिदृश्य में इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी
डॉ बिनु डी 35

शब्दों की अशुद्धि में... (कविता) - **आतिरा धनिष्ठा** 40

दलित आंदोलन और दलित साहित्य - **डॉ सिन्धु ए** 41

हिंदी कथा साहित्य में परिवार: परिभाषाएँ एवं भेद - **डॉ स्मिता चाक्को** 44

व्यवस्था के हथकंडे और व्यक्ति की नियति : जितेंद्र भाटिया की
कहानियों के संदर्भ में - **डॉ सौम्या. एस** 46

ममता कालिया की कहानियों में नारी विमर्श - **जीता जोस** 50

यमदीप और तीसरी ताली का तुलनात्मक अध्ययन - **जीत कौर** 54

प्यार खुद से करो (कविता) - **श्रीनिधी शिवदासन** 58

'पट्टिनत्तार' (काव्य)
मूल : पी.रविकुमार, अनुवाद : प्रो.डी. तंकप्पन नायर 59

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 62

माखन लाल चतुर्वेदी की कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ चंद्रकांत सिंह

माखन लाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य की अन्यतम विभूति हैं। अपने साहित्यिक जीवन के द्वारा उन्होंने न केवल साहित्यिक यश अर्जित किया बल्कि देश को सांस्कृतिक रूप से जागृत करने का काम भी किया। हिंदी साहित्य में उनकी विशेष पहचान एक कवि के रूप में बनी किन्तु यह अवश्य जानना-समझना चाहिए कि चतुर्वेदी जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। काव्य-लेखन के अतिरिक्त उन्होंने कर्मवीर, प्रभा जैसे साहित्यिक पत्रों का सम्पादन भी किया। यही नहीं गद्य लेखन में भी अपना लोहा मनवाते हुए अपने वैविध्य को उन्होंने सिद्ध किया, यह और बात है कि उन्हें प्रसिद्धि कविता के द्वारा मिली। माखन लाल चतुर्वेदी विशुद्ध रूप से साहित्यिक चिंतक भर न थे, उन्होंने साहित्य को आचरण के रूप में उतारा। साहित्य उनके व्यक्तित्व की प्रतिध्वनि था। वे मानते थे कि साहित्यिक व्यक्ति को निरा वाक् शास्त्री नहीं होना चाहिए अपितु मन,वाणी और कर्म से ईमानदार होते हुए प्रखर देश प्रेमी होना चाहिए। यही कारण है कि उन्होंने देश-सेवा और सामाजिक प्रतिबद्धता के द्वारा अपने जीवन को जादुई स्पांतरण दिया। वे अंतरतम से गांधी जी का सम्मान करते थे, यही कारण है कि उनकी कविताओं एवं कहानियों में गांधीवादी आदर्श की स्पष्ट छाप है। उन्होंने जिस भी विधा में रचनात्मक लेखन किया, उसमें प्रामाणिक अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है, इस बात से शायद ही इनकार किया जा सके। वे भारत माता की स्वतंत्रता एवं जन साधारण की मुक्ति की स्पष्ट आवाज़ थे, उन्होंने पराधीन भारतीयों को न केवल जगाने का काम किया बल्कि देश की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व बलिदान करने का निवेदन भी किया। गणेश शंकर विद्यार्थी के मार्गदर्शन में उन्होंने साहित्य को जनजागरण और देश-प्रेम का माध्यम बनाया। कई बार वे राष्ट्रीय चिंता के कारण जेल भी गए किन्तु निरुत्साहित न हुए। वे सच्चे भारतीय थे, यही कारण है कि उन्हें एक भारतीय आत्मा के रूप में जाना जाता है। उनके द्वारा लिखी गयी कविताओं की देश भर में चर्चा हो रही थी, उनके द्वारा लिखे गए साहित्य में भारत की संवेदनात्मक मनोभूमि का साक्षात्कार किया जा सकता है। बात यदि उनके द्वारा लिखी गयी कहानियों की करें तो ये कहानियाँ न्याय का समीकरण रचती हैं, शोषण के विषम शिविरों को तोड़ती हुई कहानियाँ जहाँ आम आदमी के पक्ष में खड़ी होती हैं वहीं इन कहानियों में भारतीयता की स्पष्ट छाप है। भारतीय परिवेश की सजग उपस्थिति के कारण उनके द्वारा लिखी गयी कहानियाँ जहाँ व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने का काम करती हैं, वहीं इन कहानियों में सामाजिक परिवेश की जड़ता को व्यक्त करने का अनूठा गुर भी है। चतुर्वेदी की कहानियों में वाचालता नहीं है बल्कि अद्भुत साफगोई है। कहानियों का कथानक बुनते हुए कथाकार ने जिन ग्रामीण बिम्बों का जाल बुना है वह मन को मोह लेता है। चूँकि माखन लाल चतुर्वेदी मुख्यतः कवि हैं अतः उनकी कहानियों में भाव एवं संवेदना का अपूर्व विस्तार है। उनकी कहानियाँ पाठकों को संवेदनशीलता के अपूर्व लोक में ले जाती हैं जहाँ किसी भी प्रकार का शोषण एवं विभेद नहीं है। कहानियों का स्थापत्य ही कुछ इस तरह का है कि एकबारगी कहानियाँ अपने लक्ष्य से हटती हुई जान पड़ती हैं किन्तु जैसे-जैसे कहानियों में आरोह घटित होता है, ये युगीन सत्य को बयाँ करती हुई शोषण के सारे ध्रुवों को ध्वस्त करती हैं। कहानियों को बुनते हुए माखन लाल चतुर्वेदी के यहाँ वह कुशलता नहीं दिखाई पड़ती जो प्रेमचंद के यहाँ दिखती हैं इसलिए कहानियों में कहीं-कहीं तारतम्यता का अभाव भी है किन्तु शनैः शनैः कहानियाँ जब अंत की ओर गतिशील होती हैं इनमें अपूर्व जादुई शक्ति का विस्तार होता जाता है। अद्भुत कवित्व शक्ति एवं कल्पना की समाहार-शक्ति के कारण कहानियाँ भिन्न किस्म का